चायशतकम्

(हास्यव्यंग्यसंवलितम्)

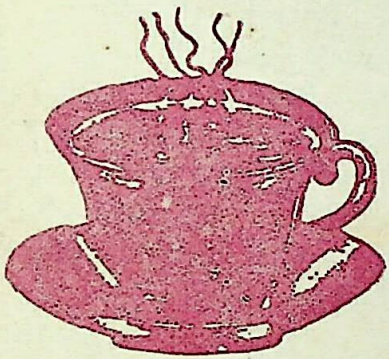

पद्म शास्त्री

128 मुक्तानन्दनगरम्,
गोपालपुरामार्गः
जयपुरम् 15

मूल्य २) रु०

विनियोगः —

चायशतकम्

चायमिति मन्त्रस्य लिप्टन-ऋषिः दुग्धो देवता शर्कराच्छन्दः कपप्लेटौ कीलके क्षुधातन्द्रानिवारणार्थं मन्दाग्निप्राप्त्यर्थञ्च चायपाने विनियोगः ।

वर्षतौ चैकदा गोष्ठ्यां गन्तुं योधपुरं प्रति ।
प्रस्थितोऽहञ्च शर्वर्यां पूर्णिमायां निकेतनात् ॥१॥

एक बार वर्षा ऋतु में, किसी गोष्ठी में जोधपुर जाने को, पूर्णिमा की रात्री में, मैंने घर से प्रस्थान किया ॥१॥

आरक्षणविधिं कृत्वा रेलयानेन गच्छता ।
शायिकायां शयानेन दृष्टं वै कौतुकं महत् ॥२॥

आरक्षण (रिजर्वेशन) करके जब मैं रेल के द्वारा जा रहा था तथा शायिका में शयन कर रहा था तो एक महान् कौतुक (कौतूहल) दृष्टिगोचर हुआ ॥२॥

नेदिष्ठायां शयानाऽऽस्ते सिन्धुजा कापि गत्वरी ।
प्ररुदन्तौ सुतौ चास्तां यमलौ नलकूबरौ ॥३॥

उसी ओर जाने वाली कोई सिन्धु देश की स्त्री समीप की शायिका पर शयन कर रही थी । नलकूबर के समान उसके दो जुडवे पुत्र रो रहे थे ॥३॥

चायं-चायमिति प्रौच्चैर्विलपन्तौ सुताविमौ ।
कोलाहलं प्रकुर्वाते कर्णास्फोटनपूर्वकम् ॥४॥

ये दोनों पुत्र चाय-चाय इस शब्द को ऊँचे स्वर में कहते हुए विलाप करते हुए से प्रतीत हो रहे थे । उनका कोलाहल कानों को फोड़ सा रहा था ॥४॥

तयोः कोलाहलेनेत्थं सद्यः सञ्जातवेपथुः ।
समैक्षिष्टञ्च तौ बालौ कमनीयकलेवरौ ॥५॥

उनके द्वारा किये गये इस प्रकार के कोलाहल से शीघ्र ही मुझ में कम्पन सा हुआ । मैंने देखा कि उन दोनों बालकों का शरीर सुन्दर है ॥५॥

गवाक्षाद्धि द्रुतं माता चायं क्रीतवती तदा ।
तौ चायचषकं पीत्वा तृप्तौ चात्यन्तहर्षितौ ॥६॥

तब माता ने शीघ्र ही खिड़की से चाय खरीदी। चाय के प्याले को पीकर वे दोनों पुत्र बडे प्रसन्न थे ॥६॥

मातृस्तन्येन चोद्विग्नौ गलच्चाश्रुमुखौ च तौ।
सद्यः प्रफुल्लवदनौ सञ्जातौ चायसेवनात् ॥७॥

वे दोनों माता के स्तनपान से उद्विग्न से प्रतीत हो रहे थे। आँखों से निकलने वाले आँसुओं से उनका मुंह गीला हो रहा था। चाय के सेवन से शीघ्र ही उनका मुँह खिल उठा ॥७॥

रजनीगर्भसम्भूतौ सूर्याचन्द्रमसाविव।
सिन्धुमुद्भिद्य चायस्य प्रचाराय विनिर्गतौ ॥८॥

वे पुत्र, रजनी के गर्भ से उत्पन्न सूर्य-चन्द्रमा की तरह प्रतीत हो रहे थे, मानो वे सिन्धु का उद्भेदन कर चाय के प्रचार के लिए निकल पड़े हों ॥८॥

शायिकायां समं मात्रा शयनं चक्रतुः क्षणात्।
आविभातं जजागार निद्राभंगेन किन्त्वहम् ॥९॥

वे क्षणभर में माता के साथ शायिका में ही सो गये। किन्तु मैं निद्राभंग हो जाने से प्रातःकाल तक जगता रहा ॥९॥

वीक्ष्य चायस्य माहात्म्यं हृदि सञ्जातकौतुकः।
लिलेख चायशतकं कौतुकायाद्विषां मुदे ॥१०॥

इस चाय का महात्म्य (प्रभाव) देखकर हृदय में कौतुक उत्पन्न हुआ। इसी कौतुक के लिए एवं मित्रों की प्रसन्नता के लिए मैंने यह चायशतक लिखा है ॥१०॥

तत्सर्वप्रथमं पीतं ध्यानमग्नेन योगिना।
निद्रातन्द्रापनुत्यर्थं तिब्बते बौद्धभिक्षुणा ॥११॥

सर्वप्रथम, तिब्बत में किसी ध्यानमग्न-योगी-बौद्धभिक्षु ने निद्रा एवं तन्द्रा को दूर करने के लिए, इस चाय का पान किया था ॥११॥

हिमालयाद्विनिर्गत्य अटकात्कटकं गता।
पूर्णे भूमण्डले व्याप्ता चायगंगा चिरन्तनी ॥१२॥

यह चिरन्तनी-चायगंगा, हिमालय से निकल कर अटक,अटक से कटक तक चली गई एवं पूरे भूमण्डल में व्याप्त होगई ।।१२।।

सोमपानं सुराणाञ्च रक्तपानन्तु रक्षसाम् ।
मर्त्यलोके मनुष्याणां चायपानं विशिष्यते ।।१३।।

जिस प्रकार देवता सोमपान करते हैं, राक्षस रक्तपान करते हैं, उसी प्रकार इस मनुष्य लोक में मनुष्यों के लिए चायपान ही श्रेष्ठ पान है ।।१३।।

कल्पवृक्षः स्वयं चायं वर्तते चायपादपः ।
कल्पना कल्पवृक्षस्य कृता, मिथ्या प्रतीयते ।।१४।।

यह चाय का पौधा स्वयं ही कल्पवृक्ष है । कल्पवृक्ष की जो कल्पना की गई है वह मिथ्या प्रतीत होती है ।।१४।।

स्वर्गलोके कल्पवृक्षः पाताले कामधेनुका ।
भूलोके चायवृक्षोऽस्ति सर्वसिद्धिप्रदायकः ।।१५।।

स्वर्गलोक में कल्पवृक्ष, पाताल में कामधेनु एवं इस भूलोक में चाय का वृक्ष सर्वसिद्धियों को प्रदान करने वाला है ।।१५।।

फले मूले तथा पुष्पे यः प्रभावोऽस्ति शाखिनाम् ।
वैशिष्ट्यं चायपात्राणां केवलं दृश्यते महत् ।।१६।।

वृक्षों के फल में, मूल में तथा पुष्प में जो प्रभाव है वह महान् वैशिष्ट्य विशेषतः केवल चाय के पत्तों में ही प्राप्त हो जाता है।१६

प्रशशंस च गीतायां भगवान् बादरायणः ।
बदरीवनसम्भूतं चायमत्र विशेषतः ।।१७।।

भगवान् बादरायण (व्यास) ने विशेषरूप से बदरी-वन में उत्पन्न इस चाय की गीता में भी प्रशंसा की है । (सर्वस्य चाहं (चायं) हृदि·····) ।।१७।।

इन्द्राणी इन्द्रमापेदे प्रतिश्यायविकर्षिता ।
प्राह, क्वाथञ्न पास्यामि चायमानय सुव्रत ! ।।१८।।

प्रतिश्याय से विकर्षित (जुकाम से उत्पीडित) इन्द्राणी, इन्द्र के पास पहुँची और कहने लगी हे सुव्रत ! मैं क्वाथ नहीं पीऊँगी, चाय लाओ ।।१८।।

इन्द्रस्तु चायमानाय्य हृष्टस्तस्यै प्रदत्तवान् ।
प्राह भो, स्वास्थ्यलाभाय पिब शीघ्रं पतिव्रते! ॥१९॥

इन्द ने प्रसन्न होकर उन्हें चाय ला कर दी और कहा, हे पतिव्रते ! स्वास्थ्यलाभ के लिए शीघ्र ही चाय का पान करो ॥१९।

क्रियते शर्कराक्षेपो भाजने चोद्वलज्जले ।
प्रक्षेपश्चायपत्राणां दुग्धञ्च तदनन्तरम् ॥२०॥

उबलते हुए जल वाले पात्र में शक्कर डाली जाती है, चाय की पत्तियाँ डाली जाती हैं । तदनन्तर दूध डाला जाता है ॥२०॥

चत्वरे चत्वरे, रथ्याकोणे कोणे, गृहे गृहे ।
उटजे, नगरे, ग्रामे चायमत्र प्रसर्पति ॥२१॥

यह चाय, चौराहे चौराहे पर, गली के कोने कोने पर, घर-घर में, झोपड़ी में, नगर में, गाँव में फैली हुई है ॥२१॥

एलालवंगसंयुक्तं तुलसीपत्रमिश्रितम् ।
चायं वीक्ष्य तु देवानामपि लोलुभ्यते मनः ॥२२॥

इलायची एवं लोंग से युक्त, तुलसी के पत्तों से युक्त चाय को देखकर तो देवताओं का मन भी ललचा जाता है ॥२२॥

अनेके सन्ति वै भेदाश्चायस्य पृथिवीतले ।
कडक-हल्कीतिभेदाभ्यां द्विविधं चायमुच्यते ॥२३॥

यद्यपि इस पृथिवी पर चाय के अनेक भेद हैं, कड़क एवं हल्की-इन भेदों से यह चाय दो प्रकार की है ॥२३॥

अखण्डं तव साम्राज्यं विद्यते धरणीतले ।
चायदेवि ! नमस्तुभ्यं नित्यं चैतन्यकारिणि ! ॥२४॥

इस पृथ्वीतल पर तुम्हारा अखण्ड साम्राज्य है । हे चाय-देवि ! हे चैतन्यकारिणि ! तुम्हें नित्य नमस्कार हो ॥२४॥

न पीतं दाक्षिणात्येन समुद्रं क्षारसंयुतम् ।
समुद्रनामकं चायं पीतं वै कुम्भयोनिना ॥२५॥

दाक्षिणात्य-अगस्त्य ने, लवणयुक्त समुद्र का पान नहीं किया था अपितु कुम्भयोनि ने, (अगस्त्य ने) समुद्रनामक चाय का पान किया था ॥२५॥

उत्सवेषु तथा गोष्ठ्यां, यात्रायां, शौचकर्मणि ।
सम्मेलनेषु चायस्य उपयोगः प्रशस्यते ।।२६।।

उत्सवों में तथा गोष्ठी में, यात्रा में, शौचकर्म में, सम्मेलनों में चाय का उपयोग श्रेष्ठ माना जाता है ।।२६।।

चायात्प्रारभ्यते गोष्ठी चायाच्चैव समाप्यते ।
चायं मध्येऽपि, सन्ध्यावत् त्रिकालं सेव्यते बुधैः ।।२७।।

कोई भी गोष्ठी चाय से प्रारम्भ होती है तथा चाय से ही समाप्त होती है । गोष्ठी के मध्य में भी चाय पी जाती है। विद्वान् लोग सन्ध्या की तरह इसका त्रिकाल सेवक करते हैं ।२७।

होटले चायपानान्ते द्रव्यं यच्छन्ति ये नराः ।
प्राप्नुवन्ति च ते पुण्यं समग्रं चायपायिनाम् ।।२८।।

जो लोग होटल में चाय पीने के बाद पैसे देते हैं वे सभी चाय पीने वालों का पुण्य प्राप्त कर लेते हैं ।।२८।।

लभन्ते पुण्यमायुष्यं पृथिव्यां परमं पदम् ।
नरकेषु न जायन्ते प्राणान्ते पुण्यशालिनः ।।२९।।

वे लोग पुण्य, आयु, पृथ्वी पर श्रेष्ठ पद प्राप्त करते हैं । प्राणान्त होने पर भी वे पुण्यशाली नरकों में उत्पन्न नहीं होते हैं ।।२९।।

ये धूर्ता यान्ति चायान्ते शीघ्रं ताम्बूलचर्वणे ।
नाशुभं जायते तेषां कालान्ते चाशुभं भवेत् ।।३०।।

जो धूर्तलोग, चाय पीने के बाद शीघ्र ही पान खाने चले जाते हैं उनका कुछ भी अशुभ (बुरा) नहीं होता । भले ही कालान्तर में अशुभ हो ।।३०।।

प्रासादे, उटजे, हर्म्ये, चलचित्रालये, गृहे ।
भारते विद्यते चास्य साम्यवादसमा स्थितिः ।।३१।।

राजमहल में, झोपड़ी में, घर में, किम्वा सम्पूर्ण भारत में इस चाय की स्थिति साम्यवाद की तरह बनी हुई है ।।३१।।

नोच्चनीचगतो भेदो दृश्यते वर्णलिंगयोः ।
प्रवृत्ते चायपाने तु सर्वे वर्णा द्विजातयः ।।३२।।

इस चायपान में न तो ऊँच-नीच का भेद रहता है तथा न वर्ण एवं लिंग का। जब चायपान प्रारम्भ होता है तो सभी वर्ण द्विजाति (सवर्ण) हो जाते हैं ॥३२॥

गुरुशिष्याः स्वामिदासाः जटिलाश्चैव मुण्डिनः।
एकाशनाश्चायगोष्ठ्यां रमन्ते गतमत्सराः ॥३३॥

गुरु एवं शिष्य, स्वामी एवं दास, जटा वाले एवं मुण्डी (सिर मुडे हुए) चाय गोष्ठी में एक ही आसन पर बैठते हैं तथा रागद्वेष को भूल जाते हैं ॥३३॥

प्रसिद्धाः शाखिनः सन्ति फलैः पुष्पैश्च सन्तु ते।
केवलं पत्रनिवहै र्गरीयाँस्त्वं महीतले ॥३४॥

अपने फलों एवं पुष्पों से बहुत से वृक्ष प्रसिद्ध हो चुके हैं किन्तु इस पृथ्वी पर चाय तो केवल अपने पत्तों के कारण ही प्रसिद्ध हुई है ॥३४॥

महत्त्वं चायपत्राणां न्यूनं कर्तुन्न शक्यते।
कोटिकोटिजनाश्चायव्यवसाये प्रतिष्ठिताः ॥३५॥

चाय के पत्तों का महत्त्व कम नहीं किया जा सकता है। करोडों लोग चाय के व्यापार में लगे हुए हैं ॥३५॥

जायते तरुणो वृद्धः श्रमिको विगतक्लमः।
विजेता जायते नेता चायस्यास्य प्रभावतः ॥३६॥

इस चाय के प्रभाव से वृद्ध भी तरुण (युवा) हो जाता है अथवा तरुण भी वृद्ध हो जाता है। श्रमिक की थकावट दूर हो जाती है। नेता विजय को प्राप्त हो जाता है ॥३६॥

गोपा गोप्यश्च संगोष्ठ्यां स्वकक्षे चाधिकारिणः।
पिबन्ति प्रोत्थिताश्चायं सभ्यम्मन्याः सभासदः ॥३७॥

गोप एवं गोपियाँ, किसी संगोष्ठी में, अधिकारी लोग अपने कमरे में तथा स्वयं को सभ्य मानने वाले सभासद (सभा में बैठे हुए लोग) खड़े होकर चाय पिया करते हैं ॥३७॥

अर्द्धविकाशवेलायां सचिवालयप्रांगणे।
त्वरन्ते चायपानार्थं पंक्तिबद्धा सहस्रशः ॥३८॥

सचिवालय के प्रांगण में अर्द्धविकाश के समय, सैंकड़ों व्यक्ति, पंक्तिबद्ध होकर चाय पीने के लिए शीघ्रता करते हैं ।।३८

चायव्याजेन बहवः कार्यचौरा ययुर्गृहम् ।
कार्यं सम्पाद्य सायाह्ने चासन्द्यां पुनरागताः ।।३९।।

बहुत से कामचोर-कर्मचारी तो चाय के बहाने से घर चले जाते हैं । घर का काम करके सायंकाल पुनः अपनी कुर्सी पर आकर बैठ जाते हैं ।।३९।।

किमस्ति दुष्करं कार्यं लम्बितं ना विलम्बितम् ।
कार्यालयेषु चायेन सद्यः कर्तुं न पार्यते ।।४०।।

कार्यालयों में ऐसा कौन सा कठिन कार्य है जो बहुत दिनों से लटक रहा हो या जिसमें विलम्ब हो रहा हो, चाय के द्वारा जिसे शीघ्र ही नहीं कराया जा सकता हो ? ।।४०।।

असाध्यं मन्यसे यत्त्वं तत्साध्यं सम्प्रजायते ।
यत्र यत्रावरोधः स्यात्तत्र चायं समर्पय ।।४१।।

जिस कार्य को तू असाध्य मान रहा है वह चाय से साध्य (संभव) हो जाता है । जिस जिस कार्य में अवरोध (बाधा) आ रहा हो, वहाँ चाय समर्पित कर ।।४१।।

कार्यालयेषु कार्यार्थी नित्यं गत्वाधिकारिणम् ।
कार्यसम्पादनार्थाय चायमानयति द्रुतम् ।।४२।।

काम करवाने वाला व्यक्ति, नित्य ही कार्यालयों में जाकर कार्य को करवाने के लिए शीघ्र ही चाय ले आता है ।।४२।।

नेतारः पत्रकाराश्च मन्त्रिणश्चाधिकारिणः ।
कवयो लेखका भृत्याश्चाभ्यस्ताश्चायचुम्बने ।।४३।।

नेता, पत्रकार, मन्त्री, अधिकारी, कवि, लेखक, नौकर ये व्यक्ति चाय पीने के अभ्यस्त होते हैं ।।४३।।

कार्यं जीवनपर्यन्तं करणीयं भवेदतः ।
त्यक्त्वा कार्यं समायाताश्चत्वरे चत्वरे जनाः ।।४४।।

"काम तो जीवन भर करना होगा" यह सोचकर अपने कार्य को छोड़कर लोग चौराहों पर आ गये हैं ।।४४।।

लिपिकः क्व गतः पृष्टे चाधिकारी जगाद तम् ।
अत्रैव यत्र कुत्रापि चायपाने गतो भवेत् ।।४५।।

लिपिक कहाँ गया है ? ऐसा पूछने पर अधिकारी ने उसे कहा—यहीं कहीं चाय पीने गया होगा ।।४५।।

दधिमन्थनघोषस्य क्व कथा भारताजिरे ।
यशोदानन्दनश्चायपानेनाद्य प्रहर्षितः ।।४६।।

इस भारत में अब दही मथने का वह घोष (शब्द) कहाँ?। अब तो यशोदानन्दन (बाल-कृष्ण) चाय पीकर प्रसन्न हो रहे हैं ।।४६।।

संरक्तनयनः कोपात् कालिन्दीं कर्षयन् बली ।
चायेन वशमायाति रेवतीरमणो हली ।।४७।।

क्रोध से लाल नेत्र वाले जो बलदेव अपने हल से यमुना को खींचते थे वे रेवती के पति बलदेव भी चाय के वश में आ जाते हैं। अर्थात् चाय पीने से उनका क्रोध शान्त हो जाता है ।।४७।।

शुद्धदुग्धघृताभावे पूजाकर्मणि सम्प्रति ।
कथं पञ्चामृतं चायं देवेभ्यो न समर्प्यते ? ।।४८।।

पूजाकर्म में, आजकल शुद्ध दुग्ध एवं घृत के अभाव में, यह पञ्चामृत चाय, देवताओं को क्यों समर्पित नहीं की जाती है ? ।।४८।।

यद्देवप्रतिमानान्तु पयः स्नानमिवार्चने ।
उष्णत्वात्तर्हि देवानां चायस्नानन्न युज्यते ।।४९।।

यद्यपि दुग्धस्नान की तरह देव प्रतिमाओं के पूजन में, उष्ण होने के कारण चाय-स्नान उचित नहीं है ।।४९।।

किन्तु स्नानान्तरं वस्त्रं चायञ्च तदनन्तरम् ।
समर्पयितुमुत्कोऽहं मन्त्रान्वै निर्दिशाम्यहम् ।।५०।।

किन्तु स्नान के पश्चात् वस्त्र, वस्त्र के पश्चात् चाय, देवों को समर्पित करने के लिए मैं उत्सुक हूं । मन्त्रों का निर्देश भी कर रहा हूं ।।५०।।

कामरूपे समुद्भूतं सर्वकामप्रपूरकम् ।
चायं गृहाण देवेश ! मम सौख्यं विवर्धय ।।५१।।

हे देवेश ! कामरूप में (असम प्रदेश) उत्पन्न हुई सब कामनाओं को पूर्ण करने वाली चाय को ग्रहण कीजिए। मेरे सुख को बढ़ाइये ।।५१।।

शर्करादुग्धसंयुक्तं कामिनीभिर्विपाचितम् ।
एलालवंगसंयुक्तं गृहाण सुरसत्तम ! ।।५२।।

हे सुरों में श्रेष्ठ ! शर्करा एवं दुग्ध से युक्त, स्त्रियों द्वारा बनाई गई, इलायची एवं लवंग से युक्त चाय को ग्रहण कीजिए।।५२

चायस्य चषकं देव ! स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्ति र्भवेज्जन्मनि जन्मनि ।।५३।।

हे देव ! चाय का प्याला आपके सामने रक्खा हुआ है। इससे मुझे अनेकों जन्मों में सफलता की प्राप्ति होती रहनी चाहिए ।।५३।।

देव ! चायप्रदानेन क्लेशितोऽसि दयापर !
धृतिं, पुष्टिं तथा तुष्टिं सुबुद्धिञ्च प्रयच्छ मे ।।५४।।

हे दयालु देव ! चाय प्रदान करके मैंने आपको कष्ट में डाल रक्खा है। आप मुझे धृति, पुष्टि, तुष्टि एवं सुबुद्धि प्रदान करें ।।५४।।

नान्यत्किमपि दातुं हि शक्तश्चायादृते प्रभो !
शीघ्रं संहर दारिद्र्यं सर्वसिद्धिप्रदो भव ।।५५।।

हे प्रभो ! मैं आपको चाय के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दे सकता हूं। आप मेरी दरिद्रता को शीघ्र नष्ट कीजिए तथा मुझे सब सिद्धियाँ प्रदान कीजिए ।।५५।।

मन्त्री स्वीयां प्रियां ब्रूते भोजनं मे न रोचते ।
प्रियेऽतिचायपानेन वायुर्व्याप्तो ममोदरे ।।५६।।

मन्त्री ने अपनी प्रिया (स्त्री) को कहा—मुझे भोजन अच्छा नहीं लग रहा है। हे प्रिये अधिक चाय पीने से मेरे पेट में वायु व्याप्त हो गई है ।

द्रुतं हि भविता स्वस्थो भद्रे ! सम्प्रति मा शुचः ।
चायेन गोलिकां देहि द्राक्तरः प्रत्युवाच ताम् ।।५७।।

डाक्टर ने मन्त्री की पत्नी को कहा, हे भद्रे ! अब सोच मत करो । चाय के साथ एक गोली दे दो ।।५७।।

प्राप कार्यालयात् श्रान्तः पतिः प्राह निजां प्रियाम् ।
चायपानोत्सुकश्चास्मि न सहिष्ये प्रतीक्षणम् ।।५८।।

कार्यालय से थका हुआ पति अपने घर आकर अपनी पत्नी से कहने लगा—मैं चाय पीना चाहता हूं । अब प्रतीक्षा नहीं कर सकता हूं ।।५८।।

द्रुतं हि प्रेयसी प्रेम्णा चायमानाय्य सस्मिता ।
वस्तुक्रीणनकीं वार्तां हृद्यां कां कान्न चक्रिरे ।।५९।।

शीघ्र ही हँसती हुई पत्नी प्रेमपूर्वक चाय बनाकर ले आई । इस बहाने उसने न जाने कौन कौन सी चीजें खरीदने की बातें कर लीं ।।५९।।

किन्नामामरतां दत्ते यत्ते पीयूषमुल्वणम् ।
लोकः किंकरतां धत्ते चायदेवि ! नमोऽस्तु ते ।।६०।।

हे चायदेवि ! तुम्हारा यह चाय रूपी गर्म गर्म अमृत क्या अमरता प्रदान नहीं करता ? सारा संसार इस चाय का दास बना हुआ है । तुम्हें नमस्कार हो ।।६०।।

पृथिव्यां सर्वजीवेषु विद्यते ते कृपाऽद्भुता ।
कोऽन्यः सहस्रजिह्वोऽपि न गुणान् वक्तुमर्हति ।।६१।।

पृथिवी पर सभी जीवों पर तेरी अनोखी कृपा बनी हुई है । हजारों जीभ वाला शेष नाग भी तेरे गुणों का बखान नहीं कर सकता, अन्य तो कर भी कौन सकता है ? ।।६१।।

सन्तप्ते ज्येष्ठमध्याह्ने चायं पीत्वा गृहाद् बहिः ।
यान्ति ये, न लभन्ते ते सूर्यसन्तापसंकटम् ।।६२।।

जो लोग, तपी हुई जेठ की दोपहरी में चाय पीकर घर से बाहर निकलते हैं, वे सूर्यताप (लू लगना) आदि संकटों को प्राप्त नहीं करते हैं ।।६२।।

मूर्छितं लक्ष्मणं वीक्ष्य खेचरन् भरुतात्मजः ।
द्रोणाचलं समानीय सुषेणं प्राप सत्वरम् ।।६३।।

लक्ष्मण को मूर्छित देख कर, आकाश पर विचरण करते हनुमान् द्रोणाचल को लाकर शीघ्र सुषेण (देव-वैद्य) के समीप गये ।।६३।।

सुषेणश्चायपत्राणां द्रुतं क्वाथं विनिर्ममे ।
पाययामास सौमित्रिं चमसेन भिषग्वरः ।।६४।।

सुषेण-वैद्य ने शीघ्र ही चाय के पत्तों का क्वाथ बनाया । उस श्रेष्ठ वैद्य ने चम्मच से वह क्वाथ लक्ष्मण को पिलाया ।।६४

लब्धसंज्ञस्तु संजातो लक्ष्मणो गतचेतनः ।
प्रभावं वीक्ष्य चायस्य जहर्षुर्मुनिपुंगवाः ।।६५।।

वेहोश हुए लक्ष्मण होश में आ गये । चाय के प्रभाव को देखकर सभी श्रेष्ठ मुनि वहुत प्रसन्न हुए ।।६५।।

तद्दिनात्प्रातरुत्थाय मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ।
चायपानं समारब्धं सशिष्यैः साधकोत्तमैः ।।६६।।

साधकों में उत्तम साधक, तत्त्वदर्शी उन मुनियों ने भी, उस दिन से प्रातः काल उठकर अपने शिष्यों के साथ ही चाय पीना प्रारम्भ कर दिया ।।६६।।

चायस्यास्य प्रभावेण सुकृच्छ्रे तपसि स्थिताः ।
मुनयो लेभिरे शान्तिं लघुत्वं हठयोगिनः ।।६७।।

इस चाय के प्रभाव से, कठिन तपस्या में लगे हुए मुनियों को शान्ति प्राप्त हुई तथा हठयोगियों को हल्कापन महसूस हुआ ।।६७।।

चाकाराद्यत् बहिर्याति यकाराच्च विशेत्पुनः ।
रमन्ते योगिनो नित्यं द्व्यक्षरे चायब्रह्मणि ।।६८।।

चा कहने से जो बाहर निकलता है तथा य कहने से पुनः प्रवेश करता है, योगी लोग इस दो अक्षर वाले चाय-ब्रह्म में नित्य ही रमण करते हैं ।।६८।।

चूडामणिश्चन्द्रमौलिश्चण्डी चान्द्रानना तथा ।
कलौ प्रपाणकं-चायं, चाकाराः पञ्च दुर्लभाः ।।६९।।

चूडामणि, चन्द्रमौलि (शिव) चण्डी, चन्द्रानना एवं चाय का पेय, ये पाँच चकार बड़ी कठिनाई से प्राप्त होते हैं ।।६९।।

चंगेजश्चर्चिलश्चाऊ चार्ल्सश्चिपानजी तथा ।
परां ख्यातिं ययुश्चेमे लौकिका हि चवर्गजाः ।।७०।।

चंगेज, चर्चिल, चाऊ, चार्ल्स तथा चिपानजी, चवर्ग से उत्पन्न ये लौकिक पुरुष बहुत ही प्रसिद्ध हुए हैं ।।७०।।

पूर्वं स्नानादिकं कृत्वा पूजापाठपरायणाः ।
पश्चात् पिबन्ति ये चायं धार्मिकास्ते प्रकीर्तिताः ।।७१।।

पहले स्नान आदि करके जो पूजा-पाठ करने में लग जाते हैं तत्पश्चात् चाय पीते हैं, वे धार्मिक कहलाते हैं ।।७१।।

एकादश्यां पूर्णिमायां सोपवासा जनाः स्वयम् ।
न्यूनान्न्यूनं पञ्चवारं चायपञ्चामृतं पपुः ।।७२।।

एकादशी तथा पूर्णमासी को जब लोग स्वयं उपवास करते हैं तो वे कम से कम पाँच वार इस चाय रूपी पञ्चामृत का पान करते हैं ।।७२।।

चायपानप्रभावेण क्षुत्पिपासाजितात्मनाम् ।
तेषां व्रतस्य साफल्यं नान्येनालं प्रपूरितुम् ।।७३।।

वे लोग चायपान के प्रभाव से ही अपनी भूख-प्यास को जीत पाते हैं । उनके व्रत की सफलता की पूर्ति किसी अन्य वस्तु से नहीं हो सकती है ।।७३।।

स्मैकादिवस्तुवच्चात्र सञ्जाताश्चायतस्कराः ।
श्रेष्ठजात्युद्भवं चायं विदेशेषु नयन्ति ये ।।७४।।

यहाँ इस देश में, स्मैक आदि वस्तुओं की तरह चाय के तस्कर (चोर) भी उत्पन्न हो गये हैं । जो श्रेष्ठ-जाति की चाय को विदेशों में ले जाते हैं ।।७४।।

प्रत्यहं वर्धमानञ्च जनौघं वीक्ष्य सर्वतः ।
कलौ दुरापञ्चायं हि भविता नात्र संशयः ।।७५।।

प्रतिदिन सब ओर जनता का समूह बढ़ता ही जा रहा है। इसमें कोई संशय नहीं कि कलियुग में चाय मिलना भी कठिन हो जायेगा ।।७५।।

श्रेष्ठवस्तुप्रभावेण क्षुद्रस्याप्युन्नतिर्भवेत् ।
चायस्याय प्रयोगेण चाऊ लोके प्रतिष्ठितः ।।७६।।

श्रेष्ठ वस्तु के प्रभाव से छोटी वस्तु की भी उन्नति हो जाया करती है। जैसे इस चाय के प्रयोग से ही तो चाऊ इस संसार में प्रसिद्ध हुए ।।७६।।

सद्यः स्फूर्तिः समायाति तन्द्रा दूरं पलायते।
निद्रा च विलयं याति चायस्यास्य प्रभावतः ।।७७।।

इस चाय के प्रभाव से शीघ्र ही स्फूर्ति (फुर्ती) आ जाती है। तन्द्रा दूर भाग जाती है। निद्रा नष्ट हो जाती है ।।७७।।

अपि चायविषं नासीत्तदा प्रचलितं भुवि।
कूटकर्मणि चाणक्यो विषकन्याः प्रयुक्तवान् ।।७८।।

क्या उस समय इस पृथ्वी पर यह चाय रूपी विष नहीं था? जो चाणक्य ने कूट कर्म में, (राजनीति के दाव-पेचों में) विषकन्याओं का प्रयोग किया ।।७८।।

ये राजनयिका भ्रष्टा रणनीतिविशारदाः।
कलंकभूता जगतस्तेऽपि चायस्य किंकराः ।।७९।।

जो संसार के लिए कलंक, रणनीति में चतुर, भ्रष्ट, राजनयिक हैं वे भी इस चाय के दास हैं ।।७९।।

जीवनाशां परित्यज्य प्रयाते च चिकित्सके।
चायं चायं हि चुक्रोश लब्धसंज्ञा स्वविष्ठरे ।।८०।।

जीवन की आशा छोड़कर चिकित्सक के चले जाने पर, अपने विस्तर पर बैठी वृद्धा को जब होश आया तो वह "चाय-चाय" चिल्ला रही थी ।।८०।।

एकलं न पपुश्चायमाग्लाः वेत्ति सखे ! न किम्।
अहो ! लावणिकं किञ्चिच्चायेन सह युज्यते ।।८१।।

हे मित्र ! क्या तुम नहीं जानते हो कि अंग्रेज अकेली चाय नहीं पीते थे ? चाय के साथ कुछ नमकीन तो होनी ही चाहिए।८१

पुत्रस्तेऽद्य समुत्पन्नः प्रसन्नाः सन्ति देवताः।
मिष्टान्नेन समं चायं स्वमित्रेभ्यः समर्पय ।।८२।।

आज तेरे यहाँ पुत्र उत्पन्न हुआ है। देवता तुम पर प्रसन्न हैं। अपने मित्रों को मिठाई के साथ चाय समर्पित कर ।।८२।।

नाद्मि वै नितरां शुष्ककपोलमिव पर्पटम् ।
प्रसन्नवदनां गौरीं कचौरीमानय द्रुतम् ।।८३।।

मैं अत्यन्त सूखे कपोल की तरह इस पापड़ को नहीं खाता हूं। तू शीघ्र ही खिली हुई गौर वर्ण की कचौरी ले आ ।।८३।।

गृहागतेभ्यो मित्रेभ्यः स्वयं स्वागतपूर्वकम् ।
न पाययति चायं यः कृपणोऽस्ति स दुर्मुखः ।।८४।।

जो व्यक्ति स्वागतपूर्वक घर में आये हुए मित्रों को चाय नहीं पिलाता यह कृपण है, उसका मुंह देखना भी पाप है ।।८४

क्व देवाः स्वर्गलोकस्थाः क्व मनुष्या भुवि स्थिताः ।
नेच्छन्ति पितरस्तस्य कृपणस्य हि दर्शनम् ।।८५।।

स्वर्गलोक में रहने वाले देवता, भूमि पर रहने वाले मनुष्य तो क्या पितर भी ऐसे कृपण का दर्शन करना नहीं चाहते हैं ।।८५

न सुखं लभते मूढ़ो यावज्जीवति भूतले ।
मृतेऽपि नरकान् घोरान् विन्दते, न पुनर्महीम् ।।८६।।

ऐसा मूढ़ व्यक्ति, जब तक पृथ्वी पर जीता है, सुख प्राप्त नहीं करता है। मरने पर घोर नरकों को प्राप्त करता है। वह पुनः पृथ्वी पर जन्म नहीं लेता है ।।८६।।

कलौ जनानां वृद्धित्वाज्जघन्यानां मलिम्नुचाम् ।
कृष्णरूपं हि चायञ्च पानार्थं ससृजे विधिः ।।८७।।

कलियुग में मैले-कुचैले एवं पापी लोगों की वृद्धि हो जाने के कारण ही विधाता ने पीने के लिए यह काले रंग की चाय बनाई है ।।८७।।

चायं विभिन्नप्रान्तेषु पीयते च सहस्रधा ।
सदुग्धं, शर्करायुक्तं, निर्दुग्धं शर्करां विना ।।८८।।

यह चाय, विभिन्न प्रान्तों में हजारों प्रकार से पी जाती है। कहीं दूध वाली चाय, कहीं शक्कर वाली चाय, कहीं दूध के रहित चाय, कहीं बिना शक्कर की चाय ।।८८।।

घृतञ्च चमरीदुग्धं लवणं तेजपत्रकम् ।
निर्मथ्य सकलं नीरे हूणाः स्वाद्यन्ति चायकम् ।।८९।।

हूण-लोग, घी, चँवर गाय का दूध, नमक, तेजपत्र, इन सब पदार्थों को जल में मथकर चाय का स्वाद लेते हैं ॥८९॥

चायपत्राणि निक्षिप्य केवलं चोद्बलज्जले ।
पिबन्ति हरितं चायं रूसराष्ट्रनिवासिनः ॥९०॥

रूस के लोग, केवल उबलते हुए पानी में, चाय के पत्ते डालकर इस हरी चाय को पीते हैं ॥९०॥

श्मशानेऽपि शवं दग्ध्वा पिबन्ति गुडचायकम् ।
कुत्र नास्ति निवेशस्ते चाय ! तुभ्यं नमो नमः ॥९१॥

कुछ लोग, श्मशान में शव को जला कर गुड़ एवं चाय का सेवन करते हैं । हे चाय ! तेरा प्रवेश कहाँ नहीं है ? तुझे नमस्कार है ॥९१॥

ये वा जलोदरग्रस्ताश्चार्शिणः पाण्डुरोगिणः ।
द्वित्राः सन्ति सहस्रेषु ते स्वाद्यन्ति न चायकम् ॥९२॥

जो लोग जलोदर रोग से ग्रस्त हैं, बवासीर एवं पीलिया से ग्रस्त हैं । ऐसे हजारों में दो तीन लोग ही होंगे जो चाय का स्वाद नहीं लेते हैं ॥९२॥

कॉफीचायौ भ्रातरौ हि मदमत्तौ द्विपाविव ।
स्वर्गारोहणसोपानभूतौ तौ च प्रकीर्तितौ ॥९३॥

चाय एवं कॉफी ये दोनों मदमत्त दो हाथियों की तरह, दो भाई ही हैं । इन दोनों को स्वर्ग में चढ़ने की सीढ़ी कहा गया है । अर्थात् इनके सेवन से स्वर्गगमन निश्चित है ॥९३॥

द्वाभ्यामाभ्यां जितो लोक इमौ जेतुं क ईश्वरः ?
चायं येन निपीतं न, एको लक्षेषु स्यान्नवा ॥९४॥

इन दोनों ने (चाय-कॉफी ने) संसार को जीत लिया है । इन दोनों को जीतने में कौन समर्थ है ? जिसने चाय नहीं पी है—ऐसा व्यक्ति लाखों में एक भी मिलना कठिन है ॥९४॥

निस्सार्यांगुलिना चाये पतितां भक्षिकामहो ! ।
द्रागिमे भारतीयाश्च किन्न स्वाद्यन्ति चायकम् ? ॥९५॥

अहो ! क्या भारतीय, चाय में पड़ी हुई मक्खी को अंगुली से निकाल कर शीघ्र ही चाय का स्वाद नहीं लेते हैं ? ॥९५॥

सञ्जाते मक्षिकापाते चाये, चायं क्षिपन्ति वै ।
न्यगिरन् मक्षिकामेव चीनदेशोद्भवा नराः ॥९६॥

चीन के लोग, चाय में मक्खी गिर जाने पर, चाय को तो फेंक देते हैं और मक्खी को निगल जाते हैं ॥९६॥

कामं वर्षतु पर्जन्यः कामं तपतु भास्करः ।
कामं हिमानिलो वातु चायं प्रेयान्हि सर्वदा ॥९७॥

भले ही बादल बरस रहे हों, भले ही सूर्य तप रहा हो, भले ही ठंडी हवा चल रही हो, चाय तो सर्वदा प्रिय ही लगती है॥९७

विश्वे कतिविधं चायं विश्वस्मिन्हि प्रयुज्यते ।
कोऽन्यो निगदितुं शक्तो ब्रह्मा नालं चतुर्मुखैः ॥९८॥

इस सम्पूर्ण विश्व में कितनी प्रकार को चायों का प्रयोग होता है ? इस बात को ब्रह्मा भी अपने चारों मुखों से नहीं बता सकता, अन्य तो कैसे बता सकता है ॥९८॥

इत्थमन्यायदेशेषु चायपानविधिश्च कः ?
शतकेऽस्मिन्हि संक्षिप्ते सम्यक्कर्तुं न शक्यते ॥९९॥

इसी प्रकार अन्यान्य देशों में चाय के क्या प्रकार (भेद) हैं। इस संक्षिप्त चाय-शतक में, इसका वर्णन अच्छी तरह नहीं किया जा सकता है ॥९९॥

कलिकाले करालेऽस्मिन् लुप्ताः संस्कृतयोऽखिलाः ।
नटीवाभिनवा काचित् प्रसृता चायसंस्कृतिः ॥१००॥

इस कराल-कलिकाल में सभी संस्कृतियाँ लुप्त हो चुकीं हैं। यह चाय-संस्कृति, किसी नवीन नटी की तरह प्रसार को प्राप्त होती जा रही है ॥१००॥

❀❀

व्यक्तित्व

17-12-35 को प्रकृति की सुरम्य क्रीडास्थली

पो० सिंगाली (पिथौरागढ़-अल्मोड़ा) में जन्म

निवास—128 मुक्तानन्दनगर, गोपालपुरामार्ग-जयपुर 15

शिक्षा—साहित्यायुर्वेदाचार्य, काव्यतीर्थ, साहित्यरत्न, शिक्षाशास्त्री, डिप्लोमा-रसियन ।

मानद उपाधियां—विद्याभूषण, आशुकवि ।

स्वर्णपदक (i) सोवियतभूमि नेहरु पुरस्कार समिति ।

(ii) राजस्थान साहित्य अकादमी ।

- ☐ प्रतिभाशाली कवि एवं पुरस्कृत लेखक ।
- ☐ प्रगतिशील लेखन के प्रति विशेष अभिरुचि ।
- ☐ कविताएं, लेख, रेडियो वार्ताएं एवं विविध विशेषांकों का सम्पादन ।
- ☐ संस्कृत साहित्य में शतक, खण्डकाव्य, महाकाव्य, व्यायोग, यात्रासंस्मरण, हास्यव्यंग्य एवं बालकथा साहित्य पर स्वतन्त्र तथा स्तरीय लेखन ।
- ☐ कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर शोधकार्य सम्पन्न ।
- ☐ सोवियत संघ के विश्वविद्यालयों में स्वरचित कृतियों पर सटीक व्याख्यान ।
- ☐ वैदिक साहित्य की कतिपय कृतियों का हिन्दी में अनुवाद ।

O

मुद्रक : श्री शङ्कर आर्ट प्रिण्टर्स, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर ।

कृतित्व

1—सिनेमाशतकम्—1960 में डा० वे० राघवन द्वारा समीक्षित।

2—स्वराज्यम्—खण्डकाव्य 1966 में "राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत।

3—लेनिनामृतम्—संस्कृत-महाकाव्य, विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान-होशियारपुर से प्रकाशित।

(i) 1975 में उत्तर प्रदेश शासन का विशिष्ट पुरस्कार।

(ii) 1976 में "सोवियत भूमि नेहरु" पुरस्कार।

इस सन्दर्भ में कवि ने सोवियत संघ की यात्रा भी की थी।

4—मदीया सोवियतयात्रा—यात्रा संस्मरण।

5—पद्यपञ्चतन्त्रम्—पञ्चतन्त्र की समस्त कथाओं का 2500 श्लोकों के अनुवाद।

6—बंगलादेशविजयः—संस्कृतव्यायोग।

7—लोकतन्त्रविजयः—संस्कृतव्यायोग।

8—विश्वकथाशतकम्—विश्व के सौ देशों की सौ श्रेष्ठ कथाएं-2 भाग, प्रकाशक—देवानगर प्रकाशन, चौडा रास्ता, जयपुर।

9—महावीरचरितामृत—15 सर्गों का प्राञ्जल हिन्दी-महाकाव्य।

10—चायशतकम्—हास्यव्यंग्य